शाश्वत यौगिक खेती से बढ़ायें उपज और आमदनी

ऑर्गेनिक खेती करने से हमारे ज़मीन की उत्पादकता बढ़ती है और ज़मीन की सेहत भी सुधरती है। किंतु ऑर्गेनिक के साथ यौगिक खेती में ज़मीन की सेहत के साथ साथ मनुष्य की और उसके मन की भी सेहत सुधरती है। क्योंकि इस खेती का हमारे मन के साथ सीधा कनेक्शन होता है। इस खेती में उपज को सकारात्मक प्रकम्पन दिये जाते हैं जिससे फसल की गुणवत्ता उच्च कोटि की बनती है। हमारी भावनायें जियो और जीने दो की प्रखर बनती है। जिससे जो भी इसको ग्रहण करता है उन्हें भी सुख और शांति की अनुभूति होती है। मैं वर्षों से ये खेती कर रहा हूँ। ना ही मुझे बेचने की फिक्र रहती और ना ही आमदनी की। अपने आप ही लोग अपनी सेहत को सुधारने के लिए हमसे सम्पर्क करते हैं।

- गतांक से आगे...

महाराष्ट्र शासन कृषि विभाग के 'आत्मा' के अंतर्गत सरकार की योजनाओं का लाभ लेने और ज़मीन का परिमाणिकरण करने के लिए हमने कृषि परम्परागत योजना के अंतर्गत 35 किसानों का

संगठन बनाया और 50 एकड़ ज़मीन ली। हमने जो संगठन बनाया उसका नाम हमने रखा 'ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर मालेगांव'।

किसान और ग्राहक के बीच बिचौलिए हुए लुप्त

ऑर्गेनिक खेती में जो पैदावार होती है जैसे - सब्जियां, गेहूं, हल्दी, चना, दालें, फल, उनके लिए हमने शहर में अलग से सप्ताह में एक दिन में 2-3 घंटे के लिए, मार्केटिंग करने के लिए एक मंडी बनाई। उसमें सभी किसान यौगिक ऑर्गेनिक माल लेकर आते हैं। और स्वास्थ्य के प्रति शहर के जो जागरुक नागरिक हैं वो वहाँ से माल खरीदते हैं। एक साल के लिए माल की कीमत फिक्स होती है, वो ना कम होती है और ना ज़्यादा। किसान एक साल के लिए कीमत को लेकर निश्चिंत रहते हैं। नागरिकों को विषमुक्त और पौष्टिक अनाज मिलता है और किसानों को अच्छा दाम मिलता है। बीच में कोई बिचौलिया नहीं है, इसलिए दोनों खुश हैं।

ऑर्गेनिक फार्म में फसल का निरीक्षण करने के पश्चात् चित्र में सरकारी अधिकारी।

शाश्वत यौगिक खेती में सरकार की मदद

सरकार एक एकड़ ज़मीन पर ऑर्गेनिक खेती करने के लिए दस हज़ार रुपये की आर्थिक सहायता करती है और ज़मीन का परिमाणिकरण करती है। जिससे किसानों को मदद मिलती है। सरकार किसानों को आधुनिक तकनीकी के बारे में जानकारी भी देती है।

शाश्वत यौगिक खेती में वेस्ट को बनाया बेस्ट

शाश्वत यौगिक खेती के अनुसार दो एकड़ ज़मीन में गन्ने की खेती होने के पश्चात् गन्ने का जो वेस्ट मटिरियल होता है वो हमने जलाया नहीं, उसको ज़मीन में गाड़ दिया। फिर उसके पश्चात् हमने ज़मीन में हल चलाकर ज़मीन को दूसरी फसल के लिए तैयार किया।

योग से बीजों का किया संस्करण

दूसरी फसल हमने हल्दी की उगाने के लिए 2-4 दिन खेत में ही बैठकर योग के वायब्रेशन्स द्वारा हल्दी के बीजों का संस्करण किया। फिर बाबा की याद में ही बीजारोपण किया। फिर हमने खेतों में चारों दिशाओं में शिव बाबा के झण्डे लगाये। झण्डे लगाने का कारण ये है कि एक तो झण्डा देखकर नकारात्मक विचार बदल जाते हैं, अच्छी भावना रहती है। दूसरा झण्डे में लाल और पीले रंग से फसल की ग्रोथ पावर बढ़ती है और कीट नियंत्रण भी होता है। हवा के झोंके से झण्डा लहराते समय सूर्य की किरणें लाल रंग पर आकर प्रतिबिंबित होकर फसल तक पहुँचने से फसल शक्तिशाली बनती है और फसल की अच्छी वृद्धि होती है। हम रोज़ अमृतवेले प्रकृति और खेतों को साकाश देते हैं। दिनभर बाबा के योग के गीत भी हम बजाते हैं। और जो मजदूर काम पर आते हैं उनको भी हम मेडिटेशन सिखाते हैं और फिर दिन में तीन बार मेडिटेशन करवाते भी हैं। इससे हमारे खेतों में आने वाले मजदूरों के व्यसन भी छूट गये। उनके जीवन में सात्विकता आ गई। जो फिर खेती में सहायक होती है।

खेत में ही बनायी खाद

खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए जो खाद का इस्तेमाल हम करते हैं वो हम खुद घर पर ही बनाते हैं। जैसे केंचुए की खाद, हरी खाद, सेंद्रिय खाद, कम्पोस्ट खाद, नीम पेंड इत्यादि का इस्तेमाल करते हैं। और हर 15 दिन बाद जीवामृत देते हैं और दशपर्णी अर्क, छाछ और निम्बोली अर्क का स्प्रे करते हैं।

खेती की अच्छी पैदावार के लिए हम जैविक संवर्धक भी देते हैं। जैसे नत्र(नाइट्रोजन), स्थिर करने वाले जीवाणु, स्फुरद की उपलब्धता कराने वाले जीवाणु, सेंद्रिय पदार्थों का विघटन कराने वाले जीवाणु, फफूंदीरोधक जीवाणु इत्यादि। फसल को जिस समय जिन जीवाणुओं की आवश्यकता होती है, वे जीवाणु ज़मीन में मिला देते हैं।

जैसा हम प्रकृति को देंगे, वैसा ही प्रकृति हमें लौटाएगी

ये सब देखकर अन्य किसान मुझसे पूछने लगे कि तुमने इसमें क्या डाला है? कौन सी खाद डाली है? इतना उत्पादन कैसे बढ़ा? इतनी कीमत कैसे मिली? तब मैंने बताया कि हमने इसमें कोई भी रासायनिक खाद नहीं डाली थी और परमात्मा शिव को याद कर प्रकृति को शुद्ध वायब्रेशन्स पहुंचाते हुए खेती की कि जैसे - मैं शांत हूँ, मैं पवित्र हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ, इस तरह से स्वमान लेकर प्रकृति को वायब्रेशन्स दिये। क्योंकि जैसा हम संकल्प करेंगे वैसा ही प्रकृति को मिलेगा और वैसा ही प्रकृति हमें वापिस करेगी। हम उसकी मदद करते हैं तो प्रकृति भी हमारी मदद करने में लग जाती है। राजयोग के अभ्यास से जो भी आध्यात्मिक शक्तियाँ मिलती हैं वे सभी समस्याओं के लिए समाधान स्वरूप में एक दवाई का काम करती है।

इस विधि के प्रयोग से उपज व गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी

हल्दी की खेती में इस विधि के प्रयोग से उत्पादन बढ़ गया। दो एकड़ ज़मीन में 50 क्विंटल हल्दी निकली। यह देख हमें बहुत खुशी हुई। हल्दी की गाँठ को उबालने के बाद भी गाँठ बड़ी-बड़ी ही रही और सुखाने के बाद भी उसकी साइज़ में कोई फर्क नहीं पड़ा, बड़ी ही रही, हल्दी की गाँठ के अन्दर के रंग में तेल जैसी तेज चमक और नर्म रही। उसकी गुणवत्ता अच्छी ही रही।

परमात्मा से मेडिटेशन द्वारा बढ़ी आमदनी

उपज होने के बाद मेरे भाई ने हल्दी मार्केट में ले जाकर उसका 1 क्विंटल का 6000रुपये के हिसाब से सौदा किया। लेकिन मेरा मन नहीं माना और मैंने थोड़ा रुकने को कहा। फिर मैं मेडिटेशन कक्ष में जाकर बाबा(परमात्मा) की याद में बैठ गया और उनसे पूछा कि मैं क्या करूँ? तो बाबा ने मुझे तुरंत टचिंग कराई कि आपको ये सौदा नहीं करना है। फिर उसके 2-4 दिन

बाद ही हम दुबारा हल्दी को मार्केट लेकर गये और वहाँ हमने बोली लगाकर उसको बेचा जिसकी हमें 6000 रुपये प्रति क्विंटल की बजाय 9000 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से कीमत मिली। इससे मुझे अनुभव हुआ कि जब हम स्व हित के साथ साथ दूसरे के हित को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं तो आमदनी में भी वृद्धि स्वतः होती है। फिर हमने बाबा को शुक्रिया किया।

जिस किसी को भी यौगिक खेती से निकला हुआ जैसे गेहूं, हल्दी, सभी प्रकार की दालें, सोयाबीन और ज्वार चाहिए तो इस नम्बर पर सम्पर्क करें - 9421295984 , 7387291054

ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर - मालेगांव
कृषि तंत्रज्ञान व्यवस्थापन यंत्रणा (आत्मा), नांदेड़
FARM REG. NO. - AR/ATMA /OF 20H/2019
संगठन - सेंद्रिय खेती

चुनार-उ.प्र.। विश्व पर्यावरण दिवस पर प्राइमरी हॉस्पिटल में पौधारोपण करते हुए चिकित्सा प्रभारी डॉ. संतोष कुमार वर्मा, विधायक प्रतिनिधि आलोक सिंह, नगर पालिका सभासद् अंकित सिंह तथा डॉ. धनेश सिंह।

ताराबाड़ी-अररिया(बिहार)। पर्यावरण संरक्षण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ व ताराबाड़ी थाना पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से पौधे लगाते हुए ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. दिनेश तथा अन्य।

कदमा-जमशेदपुर(झारखण्ड)। विश्व पर्यावरण दिवस पर सभी अतिथियों को पौधा भेंट करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. अंजू, ब्र.कु. संजू, सुरेन्द्र बेहरा,एल.आई.सी. प्रिन्सीपल, जी.मूर्ति,हेड मैनेजर,बैंक ऑफ इंडिया, सोशलिस्ट मोहन सचदेवा, सोशलिस्ट अर्जुन अग्रवाल तथा अन्य।